NAME - SANTOSH KUMAR PANDIT
ROLL No - 230033
NAME - PAPPU KUMAR
ROLL No - 230031
NAME - RITURAJ KUMAR
ROLL No - 230070
NAME - DHARAMVEER KUMAR
ROLL No - 230027
NAME - MUKESH KUMAR RANJAN
ROLL-No - 230075
NAME - MITHILESH KUMAR
ROLL No - 230052
NAME - RAJA KUMAR
ROLL No - 230032
NAME - ABHIMANYU KUMAR
ROLL No - 230062

* Difference in learners based on socio cultural contexts *

* समाजीकरण का अर्थ एवं परिभाषा *

→ अपने जन्म के समय बालक एक मनोशारीरिक प्राणी (Psychophysical Animal) होता है। वह न तो सामाजिक होता है और न असामाजिक। लेकिन धीरे-धीरे वह सामाजिक वातावरण से प्रभावित होने लगता है। उसमें सामाजिक चेतना और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित होनी आरंभ हो जाती है। वह समाज में प्रचलित परंपराओं, मान्यताओं, आकांक्षाओं, मूल्यों, आदर्शों और संस्कृति का अनुपालन करने लगता है और उनके प्रभाव में आकार उनके ही अनुसार व्यवहार करने लगता है। यही समाजीकरण कहलाता है। इस प्रकार समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति समाज में रहकर उसके मूल्यों, आदर्शों, विश्वासों और जीवन शैली को सीखता है और उसे अपने व्यक्तित्व का अंग बनाता है।

समाजीकरण के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई कुछ परिभाषाएँ निम्न प्रकार है -

किंबाल यंग के अनुसार → समाजीकरण का अर्थ यह है कि व्यक्ति जनरीतियों, रूढ़ियों, कानूनों, अपनी संस्कृति के अन्य लक्षणों, कुशलताओं और अन्य आवश्यक आदतों को सीखता है जो समाज का

क्रियाशील सदस्य बनने में हमारी सहायता देती है। वह अपने आपको अपने परिवार, पड़ोस और वर्ग के अनुकूल बनाना सीखाता है। सारांशत: समाजीकरण की संपूर्ण प्रक्रियां अंतःक्रिया या सामाजिक कार्य के अंतर्गत आती है।

* बोगाईस के अनुसार → एक साथ मिलकर कार्य करने, सामूहिक उतरदायित्व की भावना विकसित करने अन्य व्यक्तियों की कल्याण संबंधी आवश्यकताओं को सामने रखकर कार्य करने की प्रक्रिया को समाजीकरण की प्रक्रिया कहते हैं।"

* हैविघर्स्ट एवं न्यूगार्टन के अनुसार → समाजीकरण वह प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से बालक अपने समाज के स्वीकृत ढंगों को सीखते है तथा इन ढंगों को अपने व्यक्तित्व का एक अंग बनाते है।

* गिलिन एवं गिलिन के अनुसार → समाजीकरण से हमारा तात्पर्य उस प्रक्रियां से है जिसके द्वारा व्यक्ति समूह का एक क्रियात्मक सदस्य बनता है तथा उसी के स्तर के अनुसार कार्य करता है। उसके लोकाचार, परंपरा तथा सामाजिक परिस्थितियों के साथ अपना समन्वय स्थापित करता है।

* ग्रीन के अनुसार → समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक सांस्कृतिक विशेषताएँ, आत्म और व्यक्तित्व को प्राप्त करता है।

* बालक के समाजीकरण में पुरस्कार और दंड भी बहुत सहायक होते हैं।

* समाजीकरण की विशेषताएँ *

बालक के समाजीकरण की निम्नलिखित विशेषताएँ है

(1) समाजीकरण कि प्रक्रिया तीन महत्वपूर्ण पक्षो- जीव रचना, व्यक्ति तथा समाज पर आधारित है।

(2) समाजीकरण सीखने की एक प्रक्रिया है। सामाजीक मूल्यों, आदर्शों और प्रतिमानो को सीखना ही समाजीकरण है।

(3) समाजीकरण के द्वारा एक जैविकीय व्यक्ति सामाजिक प्राणी बन जाता है।

(4) समाजीकरण की प्रक्रिया जन्म से लेकर मृत्यु-पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है।

(5) समाजीकरण प्रक्रिया के द्वारा बालक समाज का कार्यात्मक सदस्य बन जाता है।

(6) समाजीकरण की प्रक्रिया व्यक्ति के आत्म के विकास करने में सहायक होती है।

(7) समाजीकरण की प्रक्रिया के द्वारा व्यक्ति सांस्कृतिक मूल्यों, मानकों और समाज द्वारा स्वीकृत व्यवहारों को सीखता है और संस्कृति के भौतिक तथा अभौतिक तत्वों को आत्मसात करता है।

(8) समाजीकरण की प्रक्रिया अनुकूलन करना सिखाती है।

(9) समाजीकरण की प्रक्रिया के द्वारा संस्कृति जीवित रहती है और समाज अपनी निरंतरता बनाए रखता है। समाजीकरण की प्रक्रिया ही संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित करती रहती है।

(10) समाजीकरण प्रक्रिया के द्वारा व्यक्ति समाज के विभिन्न समूहों का सदस्य बन जाता है।

(9) समाजीकरण की प्रक्रिया अनंत व्यापक होती है।

(10) समाजीकरण सापेक्षिक क्रिया है। समय और स्थान के अनुसार इसका रूप बदलता हुआ हो सकता है।

* समाजीकरण की प्रक्रिया *

समाजीकरण की प्रक्रिया की व्याख्या दो दृष्टियों से की जा सकती है-

(1) वैयक्तिक दृष्टि से।

(2) वस्तुनिष्ठ दृष्टि से।

वैयक्तिक दृष्टि से समाजीकरण वह प्रक्रिया है, जो समाज के सदस्यों में आंतरिक रूप से उस समय तक चलती रहती है जब तक कि वे अपने वातावरण के साथ समायोजन करने में समर्थ नहीं हो जाते। इस दृष्टि से व्यक्ति उस समाज के नियमों, परंपराओं और मूल्यों को अपना लेता है, जिसमें वह रहता है। समाजीकरण की यह प्रक्रिया आजीवन चलती रहती है। वस्तुनिष्ठ दृष्टि से समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा समाज अपनी संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित करता है।

इस दृष्टि से यह प्रक्रिया समाज के सदस्यों को उन सामाजिक कार्यों की शिक्षा प्रदान करती है। जिनको उन्हे करना चाहिए।

* समाजीकरण की प्रक्रिया के महत्वपूर्ण कारक हैं-

(1) पालन - पोषण → समाजीकरण के लिए यह आवश्यक है कि बालक का पालन - पोषण समुचित ढंग से किया जाए। ऐसा होने पर ही वह समाज के मूल्यों और आदर्शों के अनुसार आचरण करना सीखता है।

(2) अनुसरण → बालक केवल अपने माता-पिता का ही अनुसरण नही करता अपितु अपने भाई-बहनों परिवारों के अन्य सदस्यों पड़ोसियों और समुदाय के अन्य सदस्यों को भी अनुसरण करता है। बालक अपने से बड़ो के कार्यों को देखकर समाज की परंपराओं और आदर्शों को अपनाता है। इस प्रकार अनुसरण समाजीकरण का आधारभूत तत्व है।

(3) निर्देश → निर्देशों या सुझावों का बालक के समाजीकरण से गहरा संबंध है। बालक वही कार्य करता है जिसको करने के लिए दूसरे व्यक्तियों द्वारा उसको कहा जाता है या उसको निर्देश दिया जाता है।
इस प्रकार निर्देश सामाजिक व्यवहार की दिशा को निर्धारित करते हैं।

(4) सहानुभूति → समाजीकरण की प्रक्रिया में सहानुभूति का भी विशेष महत्व है। बालक को अपने जीवन में सहानुभूति की बहुत अधिक आवश्यकता होती है। सहानुभूति के द्वारा बालक में अपनत्व की भावना का विकास होता है। बालक उन लोगों के साथ विशेष लगाव रखता है, उनसे अधिक प्रेम करता है। उनकी बातों को सहज में ही स्वीकार कर लेता है, जो उससे सहानुभूति रखते हैं।

(5) सहयोग → समाज ही बालक को सामाजिक प्राणी बनाता है। सामाजिक गुणों का प्रादुर्भाव उसमें समाज के द्वारा ही होता है। जैसे-जैसे बालक समाज के अन्य व्यक्तियों से सहयोग प्राप्त करता है

जैसे-जैसे वह उनको अपना सहयोग देना भी आरंभ कर देता है। इससे उनकी सामाजिक प्रवृत्तियाँ संगठित होती हैं।

(6) आत्मीयता → आत्मीयता पारस्परिक विश्वास और सम्मान का व्यक्तिगत संबंध है। परिवार पड़ोस और समुदाय के प्रेमपूर्ण व्यवहार और सहानुभूति से बालक में आत्मीयता की भावना पैदा होती है, जो व्यक्ति बालक से प्यार करते हैं, उसके साथ सहयोग और सहानुभूति का व्यवहार करते हैं, बालक भी उनको अपना समझने लगता है और उनके व्यवहार, आचरण रहन-सहन, भाषा आदर्शों आदि को अपनाने का प्रयत्न करता है।

(7) पुरस्कार और दंड → बालक के समाजीकरण में पुरस्कार और दंड भी बहुत सहायक होते हैं। जब बालक अच्छे कार्य करता है समाज के आदर्शों, मूल्यों और मान्यताओं के अनुसार व्यवहार करता है तो उसको प्रशंसा मिलती है या पुरस्कार मिलता है। लेकिन जब बालक समाज के आदर्शों, मूल्यों और मान्यताओं के विपरीत कार्य करता है अथवा

असामाजिक कार्य करता है तो उसको दंड मिलता है। इससे बालक के समाजीकृत होने में बहुत सहायता मिलती है।

क्या आप जानते हैं समाजीकरण की प्रक्रिया जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है।

* बालक का समाजीकरण करने वाले तत्व *

समाजीकरण की प्रक्रिया आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। अतः इसमे समाज की अनेक संस्थाओं का योगदान होता है। बालक के समाजीकरण में सहायता प्रदान करने वाले प्रमुख तत्व इस प्रकार हैं (या अग्र प्रकार है)

(1) परिवार → बालक के समाजीकरण का सबसे प्रमुख और सबसे महत्वपूर्ण कारक परिवार है।

* किबाल येग के शब्दो मे, समाज के अन्दर समाजीकर के विभिन्न साधनों मे परिवार सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। बालक का जन्म परिवार में होता है और वही पर उसका विकास होता है।

परिवार में ही वह खाना-पीना, उठना-बैठना चलना-फिरना, वस्त्र पहनना, पूजापाठ करना आदि कार्यों को करना सीखता है। परिवार में ही वह समाज के नियमों का प्रारंभिक और व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करता है।

परिवार में ही वह प्रेम, सहयोग, सहकारिता सहानुभूति, दया, क्षमा, त्याग सद्भाव सहनशीलता और कर्तव्यपरायणता आदि सामाजिक गुणों को सीखता है। व्यक्ति आजीवन परिवार में रहता है। अतः परिवार समाजीकरण का सबसे अधिक स्थायी साधन है। माता-पिता भाई-बहन दादा-दादी, चाचा-चाची, ताऊ-ताई आदि परिवार के सभी सदस्य बालक के समाजीकरण में सक्रिय रहते हैं। परिवार के सदस्य ही बालक को अच्छा-बुरा, उचित, अनुचित सही, गलत, वांछनीय-अवांछनीय, न्यायसंगत अन्यायसंगत आदि का ज्ञान कराते हैं। परिवार के सहयोगी और भावात्मक वातावरण का बालक के समाजीकरण पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है।

और अपराधी विकृत, विघटित परिवारों को बालक के समाजीकरण पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

(2) विद्यालय → बालक का समाजीकरण करने वाले तत्वों में परिवार के बाद सबसे अधिक महत्वपूर्ण तत्व विद्यालय है। विद्यालय बालक के समाजीकरण का औपचारिक साधन है। विद्यालय में बालक को उसकी सभ्यता और संस्कृति से परिचित कराया जाता है, उसे समाज के मूल्य और मान्यताओं के विषय में जानकारी दी जाती है और उसे उनके अनुसार आचरण करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

विद्यालय में बालक का समुचित समाजीकरण करने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जाने चाहिए

(*) विद्यालय में बालक का समुचित समाजीकरण करने के लिए निम्नलिखित उपाय कि जाने चाहिए

(1) विद्यालयों में सामूहिक कार्यों : जैसे- वाद विवाद, पत्र-पठन, नाटक, पर्यटन आदि का आयोजन किया जाना चाहिए।

(ii) विद्यालय में सामाजिक उत्सवों का आयोजन किया जाना चाहिए।

(iii) विद्यालय में खेल-कूद साहित्यिक सांस्कृतिक आदि पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं की व्यापक व्यवस्था की जानी चाहिए।

(iv) विद्यालय में बालकों को सामूहिक अंतः क्रिया के अधिकाधिक अवसर प्रदान किए जाने चाहिए।

(v) सामाजिक अनुभवों और सामाजिक कौशलों जैसे पत्र-लेखन, सहभोज, दूरभाष का प्रयोग आदि की शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए।

(vi) विद्यालय का वातावरण प्रेम, सहयोग और सद्भाव से पूर्ण होना चाहिए।

(vii) विद्यालय का जीवन अनुशासनपूर्ण होना चाहिए बालकों में आत्मानुशासन की भावना का विकास किया जाना चाहिए।

(viii) सामाजिक रीतियों, परंपराओं और कुप्रथाओं के निराकरण के विषय में बालकों को बताया जाना चाहिए।

(14) बालकों में पुरस्कार और दंड के रूप में सामाजिक प्रतिष्ठा और तिरस्कार की स्वस्थ भावना का विकास किया जाना चाहिए।

(15) विद्यालय को लघु समुदाय का रूप दिया जाना चाहिए।

③ पड़ोस और संगी साथी → बालक के समाजीकरण में पड़ोस और संगी साथी भी सहायक होते हैं। परिवार से निकलकर वह अपने पड़ोस में रहने वाले व्यक्तियों और नोट अपने समवयस्क बच्चों के सम्पर्क में आता है। उनके साथ उठता-बैठता है, खेलता है, बातें करता है, कभी लड़ता-झगड़ता और कभी प्यार करता है। पड़ोस ही उसको अच्छी या बुरी संगति प्रदान करता है। अच्छी संगीत में उसका विकास होता है और बुरी संगति में वह बिगड़ भी सकता है। पड़ोस और संगी-साथी अच्छे सभ्य और सुसंस्कृत है तो बालक का समाजीकरण -

गलत रूप में और तीव्र गति से होता है और यदि पड़ोस और पड़ोसी अच्छे नहीं हैं तो बालक का समाजीकरण उचित दिशा में नहीं होता।

(11) जाति → बालक के समाजीकरण का एक प्रमुख साधन जाति है। प्रत्येक जाति की अपनी रीतियाँ परंपराएँ, मूल्य और आदर्श होते हैं और बालक अपनी जाति की इन्ही रीतियों, परंपराओं, मूल्यों और आदर्शों को अपनाता है। इसी कारण प्रत्येक जाति के बालकों का समाजीकरण भी अलग-अलग होता है। यद्यपि हमारे देश में संविधान के अनुसार कोई वर्ग भेद नहीं, कोई छोटा-बड़ा या ऊँचा-नीचा नहीं है लेकिन व्यावहारिक रूप से कुछ जातियाँ-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आदि अपने को ऊँचा और श्रेष्ठ समझती हैं जिसके परिणामस्वरूप इन जातियों के बालकों के अंदर अहम् और अभिमान की भावना पैदा हो जाती है तथा दूसरी जाति के बालक हीनता के शिकार रहते हैं। इन बातों का सीधा प्रभाव उनके समाजीकरण पर पड़ता है।

(5) समुदाय → बालक के समाजीकरण में समुदाय का विशेष योगदान है। समुदाय अपनी संस्कृति, कला साहित्य, इतिहास, प्रथाओं, परंपराओं, पूर्व धारणाओं, मनोरंजन के साधनों, शिक्षा के अभिकरणों, सुविधाओं, सामाजिक और धार्मिक उत्सवों और त्यौहारों के द्वारा बालक के समाजीकरण को प्रभावित करता है। समुदाय की सामूहिक क्रियाओं में भाग लेने से भी बालक के समाजीकरण में सहायता मिलती है। समुदाय का संगठन और उसकी सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति भी बालक के समाजीकरण को प्रभावित करती है।

(6) धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक संस्थाएँ → बालक के समाजीकरण पर समाज की धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संस्थाओं का भी गहरा प्रभाव पड़ता है। समाज धार्मिक रूप से कट्टर है अथवा उदार, आर्थिक रूप से पूंजीवादी है अथवा समाजवादी, राजनीतिक रूप से राजतंत्रवादी है, प्रजातंत्रवादी है या अधिनायकवादी है, आदि बातें बालक के समाजीकरण पर प्रभाव डालती है।

समाज की सांस्कृतिक संस्थाएँ बालक को समाज के रीति-रिवाजों, परंपराओं और सांस्कृतिक गतिविधियों से परिचित कराती हैं। भिन्न-भिन्न संस्थाओं के संपर्क में आने वाले बालकों के समाजीकरण में अंतर पाया जाता है।

(7) खेलकूद → खेलकूद बालक के समाजीकरण में बहुत योगदान देते हैं। बालक की रुचि खेलकूद में बहुत अधिक होती है। वह खेलते समय जाति धर्म, वर्ण, संप्रदाय, ऊँच-नीच और अन्य सभी प्रकार के भेदभावों से ऊपर उठकर दूसरे बालकों के साथ आनंद प्राप्त करता है। खेल-कूद में बालक की सामाजिक अंतःक्रिया का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन होता है। खेलकूद में बालक में प्रेम, सहयोग, सहनशीलता वफादारी सहानुभूति, नियम-पालन और टीम भावना आदि अनेक गुणों का विकास सहज ही हो जाता है।

(8) स्काउटिंग एवं गर्ल गाइडिंग → बालक के समाजीकरण करने वाले तत्वों में स्काउटिंग और गर्ल गाइडिंग का भी विशेष स्थान है। स्काउटिंग और गर्ल गाइडिंग जाति, धर्म, वर्ण, संप्रदाय, ऊंच-नीच बड़े-छोटे धनवान-निर्धन के भेद तथा संकुचित

राष्ट्रीयता की भावना को समाप्त करती है। वह समस्यायें बालक के दृष्टिकोण को व्यापक बनाती है. उनको सामूहिक कार्य करने के अवसर प्रदान करती है और उनमें निःस्वार्थ भाव से सेवा करने की भावना का विकास करती है। इन संस्थाओं की गतिविधियों में भाग लेने से बालक में प्रेम सहयोग, सहकारिता, परोपकार, अपनेपन की भावना, ईमानदारी, निष्ठा आदि गुणों का विकास होता है, जो समाजीकरण में बहुत सहायक है।

* बालक के समाजीकरण में बाधक तत्व *

मैसलो के अनुसार बालक के समाजीकरण में बाधक तत्व निम्न प्रकार है–

(1) बाल्यकालीन परिस्थितियाँ → जैसे माता-पिता से प्यार न मिलना, माता पिता के मध्य कलह और संघर्ष, विधवा माँ, माता पिता का पक्षपातपूर्ण व्यवहार, अनुचित दंड, असुरक्षा, एकाकीपन आदि।

(2) सांस्कृतिक परिस्थितियां → जैसे धर्म, जाति, वर्ग आदि से संबंधित पूर्व धारणायें और पूर्वाग्रह आदि

(3) तत्कालीन परिस्थितियां → जैसे- अन्याय, अपमान निराशा, ईर्ष्या, कठोरता आदि।

(4) अन्य परिस्थितियाँ → जैसे- शारीरिक हीनता, आत्मविश्वास का अभाव, शारीरिक दोष, शिक्षा का अभाव, आत्मनिर्भरता का अभाव, बेरोजगारी, असफलताएं आदि।

* समाजीकरण की प्रक्रिया में शिक्षक का उत्तरदायित्व

→ बालक के समाजीकरण की प्रक्रिया में माता-पिता या परिवार के बाद शिक्षक का स्थान सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। समाजीकरण की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करने के लिए शिक्षक को निम्नलिखित करने चाहिए।

(1) संस्कृति का हस्तांतरण → संस्कृति व्यक्ति के आचरण को प्रभावित करती है। पाशविक शक्तियो पर नियंत्रण और समाजोपयोगी तत्वों का विकास संस्कृति की सहायता से ही होता है। शिक्षक को बालकों को समाज की संस्कृति से परिचित करना चाहिए और उसके मन मे उसके प्रति सम्मान की भावना उत्पन्न करनी चाहिए इससे बालक के समाजीकरण में सहायता मिलेगी।

② सामूहिक कार्यों को प्रोत्साहन → बालक के समाजीकरण में सहायता प्रदान करने के लिए शिक्षक को विद्यालय में सामूहिक क्रियाओं का आयोजन करना चाहिए और उनमें भाग लेने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करना चाहिए। इससे उनमें सामूहिक भावना का उदय होगा।

③ सामाजिक वातावरण का निर्माण → बालक के उचित समाजीकरण के लिए शिक्षक को विद्यार्थियों के साथ मधुर संबंध स्थापित करने चाहिए और अधिक-से-अधिक संपर्क स्थापित करना चाहिए। शिक्षक को विद्यालय में उच्च सामाजिक वातावरण का निर्माण करना चाहिए। प्रधानाचार्य शिक्षकों, विद्यालयों अधिकारियों और कर्मचारियों को मतभेदों, गुटबंदी और गंदी राजनीति से दूर रहना चाहिए। उन्हें परस्पर प्रेमपूर्ण, सहयोगपूर्ण, सहानुभूति और सद्भावनापूर्ण व्यवहार करना चाहिए।

④ अंतर सांस्कृतिक भावना का विकास → विद्यालय के अंदर अलग-अलग संस्कृतियों के बालक शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते हैं। शिक्षक को बालकों में इस प्रकार की भावना का विकास करना चाहिए

कि वे दूसरो की संस्कृतियों के प्रति आदर का भाव रखे, उनका सम्मानकरें, उनके दृष्टिकोण को समझने का प्रयत्न करे और संकीर्ण भावनाओं से ऊपर उठें।

(5) सामाजिक आदर्शों का प्रस्तुतीकरण → शिक्षकों के अपने कथनों और विभिन्न क्रियाओं द्वारा बालकों के समक्ष उच्च आदर्शों को प्रस्तुत करना चाहिए। जिससे बालक उनका अनुकरण कर उच्च सामाजिक आचरण करना सीख सके। इससे बालक के समाजीकरण में सहायता मिलेगी।

(6) स्वस्थ मानवीय संबंध → समाजीकरण के लिए स्वस्थ मानवीय संबंधो का होना आवश्यक है। अतः शिक्षक का उतरदायित्व है कि वह विद्यालय में स्वस्थ मानवीय संबंधों का निर्माण करे। विद्यालय में छात्र - छात्र मे शिक्षक - शिक्षक में छात्र - शिक्षक मे छात्र - प्रधानाचार्य मे शिक्षक प्रधानाचार्य में मधुर संबंध स्थापित किए जाने चाहिए। विद्यालय का वातावरण अच्छे और स्वस्थ मानवीय संबंधों से ओत - प्रोत होना चाहिए।

(7) विद्यालय परंपराएँ → विद्यालय की परंपराओं का बालक के समाजीकरण पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अतः शिक्षक को चाहिए कि वह विद्यालय में सामाजिक दृष्टि से स्वस्थ और उपयोगी परंपराओं का विकास करे. उन परंपराओं में बालकों का विश्वास उत्पन्न करे और उन्ही के अनुसार कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करे।

(8) स्वस्थ प्रतियोगिता की भावना → बालक के समाजीकरण में स्वस्थ प्रतियोगिता का महत्वपूर्ण स्थान होता है। अतः शिक्षक को बालकों में स्वस्थ प्रतियोगिता की भावना का विकास करना चाहिए।

(9) विद्यालय सामुदायिक केन्द्र के रूप में → विद्यालय स्वयं में एक सामुदायिक केन्द्र होना चाहिए वहाँ पर ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन और व्यवस्था की जानी चाहिए जिनका सीधा संबंध समुदाय में होने वाले कार्यों से हो। यदि विद्यालय परिवार के सदस्य: समुदाय के सदस्यों के साथ और समुदाय के सदस्य विद्यालय

परिवार के सदस्यों के साथ सहयोग करेंगे तो बालकों का समाजीकरण समुचित रूप से स्थायी रूप में हो सकेगा ।

(10) पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं का आयोजन →
बालक के समाजीकरण के विकास में पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षक द्वारा बालकों मे सामाजिक गुणों का विकास करने के लिए खेलकूद, साहित्यिक एवं सास्कृतिक कार्यक्रमों, स्काउटिंग, एन. सी. सी. राष्ट्रीय सेवा योजना आदि का आयोजन व्यापक स्तर पर किया जाना चाहिए। इन कार्यक्रमों की रूपरेखा बनाने इनका आयोजन करने और इनका मूल्यांकन करने से अधिक-से अधिक अवसर बालकों को दिए जाने चाहिए।

* सारांश *

बालक के समाजीकरण करने वाले तत्वों में स्काउटिंग और गर्ल गाइडिंग का भी विशेष स्थान है। स्काउटिंग और गर्ल गाइडिंग जाति, धर्म, वर्ण, संप्रदाय, ऊँच नीच, बड़े-छोटे, धनवान-निर्धन के भेद तथा संकुचित राष्ट्रीयता की भावना को समाप्त करती है। यह समस्याएँ बालक के दृष्टिकोण को व्यापक बनाती है उनको सामूहिक कार्य करने के अवसर प्रदान करती है और उनमें निःस्वार्थ भाव से सेवा करने की भावना का विकास करती है। इन संस्थाओं की गतिविधियों में भाग लेने से बालक में प्रेम सहयोग, सहकारिता, परोपकार, अपनेपन की भावना ईमानदारी, निष्ठा आदि गुणों का विकास होता है, जो समाजीकरण में बहुत सहायक है।

* सारांश *

बालक के समाजीकरण करने वाले तत्वों मे स्काउटिंग और गर्ल गाइडिंग का भी विशेष स्थान है। स्काउटिंग और गर्ल गाइडिंग जाति, धर्म, वर्ण, संप्रदाय, ऊँच नीच, बड़े-छोटे, धनवान-निर्धन के भेद तथा संकुचित राष्ट्रीयता की भावना को समाप्त करती है। यह समस्याएँ बालक के दृष्टिकोण को व्यापक बनाती हैं उनको सामूहिक कार्य करने के अवसर प्रदान करती है और उनमें निःस्वार्थ भाव से सेवा करने की भावना का विकास करती है। इन संस्थाओं की गतिविधियों मे भाग लेने से बालक में प्रेम सहयोग, सहकारिता, परोपकार, अपनेपन की भावना ईमानदारी, निष्ठा आदि गुणों का विकास होता है, जो समाजीकरण में बहुत सहायक है।

Topic

Dimension of difference in Psychological attributes - Cognitive, Aptitude.

Introduction :-

Psychology is the study of mind and behavior. its Subject matter includes the behavior of humans and nonhumans, both conscious and unconscious phenomena, and mental processes such as thoughts, feelings, and motives.

In psychology, aptitude refers to a person's innate capacity for learning specific abilities or knowledge. It's crucial because it can forecast a person's success in particular tasks or circumstances, aid in educational and occupational placements, and help people make wise personal and professional decisions.

Dimensions of psychology :-

The four dimensions of psychological health include mental,

Spiritual, social and physical. Mental health refers to our conscious and subconscious thoughts. these thoughts influence our behaviors, feelings, and attitudes.

Types of Dimensions psychology –

1. Mental psychology
2. Spiritual psychology
3. Social psychology
4. phiysical psychology

1. MENTAL PSYCHOLOGY :–

For dimensions seem worth measuring in general population surveys: life satisfaction, positive affect, anxiety and depression. Furthermore, one of the well-being dimensions, life satisfaction, is quite

strongly correlated with a distress dimension, depression.

2. SPIRITUAL PSYCHOLOGY :-

The spiritual dimension involves exploring the key principles, belifs and values that give meaning and purpose to your life. It's about living in a way that is consistent with your "world view" while also being tolerant on others who hold different beliefs and values.

3. SOCIAL PSYCHOLOGY :-

It consists of the capacity of the society to implement practices to ensure the respect to human rights, diversity, cultural traditions, and the rights of

Communities in order to decrease the gap between the rich and the poor and Social justice.

4. PHYSICAL PSYCHOLOGY :-

Contains the Concepts of stress, cognition, behavior attitude, emotion, and ultimately, personality.

Aspect of psychological attributes —

- ☐ COGNITIVE
- ☐ PERSONALITY
- ☐ INTEREST
- ☐ APTITUDE
- ☐ VALUES
- ☐ CREATIVITY

☐ **Cognitive :-**

Cognitive Skills include attention, Short term memory, long term memory, logic reasoning

and auditory processing, visual processing and processing speed, they are the skills brain use to think, learn, read remember, pay attention and solve problems.

8 Cognitive Skills

1) SUSTAINED ATTENTION
2.) RESPONSE INHIBITION
3.) SPEED TO INFORMATION PROCESSING
COGNITIVE FLEXIBILITY AND CONTROL
4.) MULTIPLE SIMULTANEOUS ATTENTION
5.) WORKING MEMORY
CATEGORY FORMATION
6.) PATTERN RECOGNITION

Stages of cognitive development

Piagets for stages :-

- Stage - Birth to 18-24 Month old
  Preoperational - 2 to 7 years old

- Concreat operational - 7 to 11 years old Formal operational - Adolescenc to adulthood.

Here are some play ideas to support your child's cognitive development

- play simple board game like shake and laddles with our child, or simple, card games like go fish or snap.
- Read books and tells jokes and riddle.
- Encourage stacking and bulding games or play with cardboard exam.

Personality :-

- personality developed is actually the development from the organized. pattern of attiude and behaviours which makes an individual distinctive.

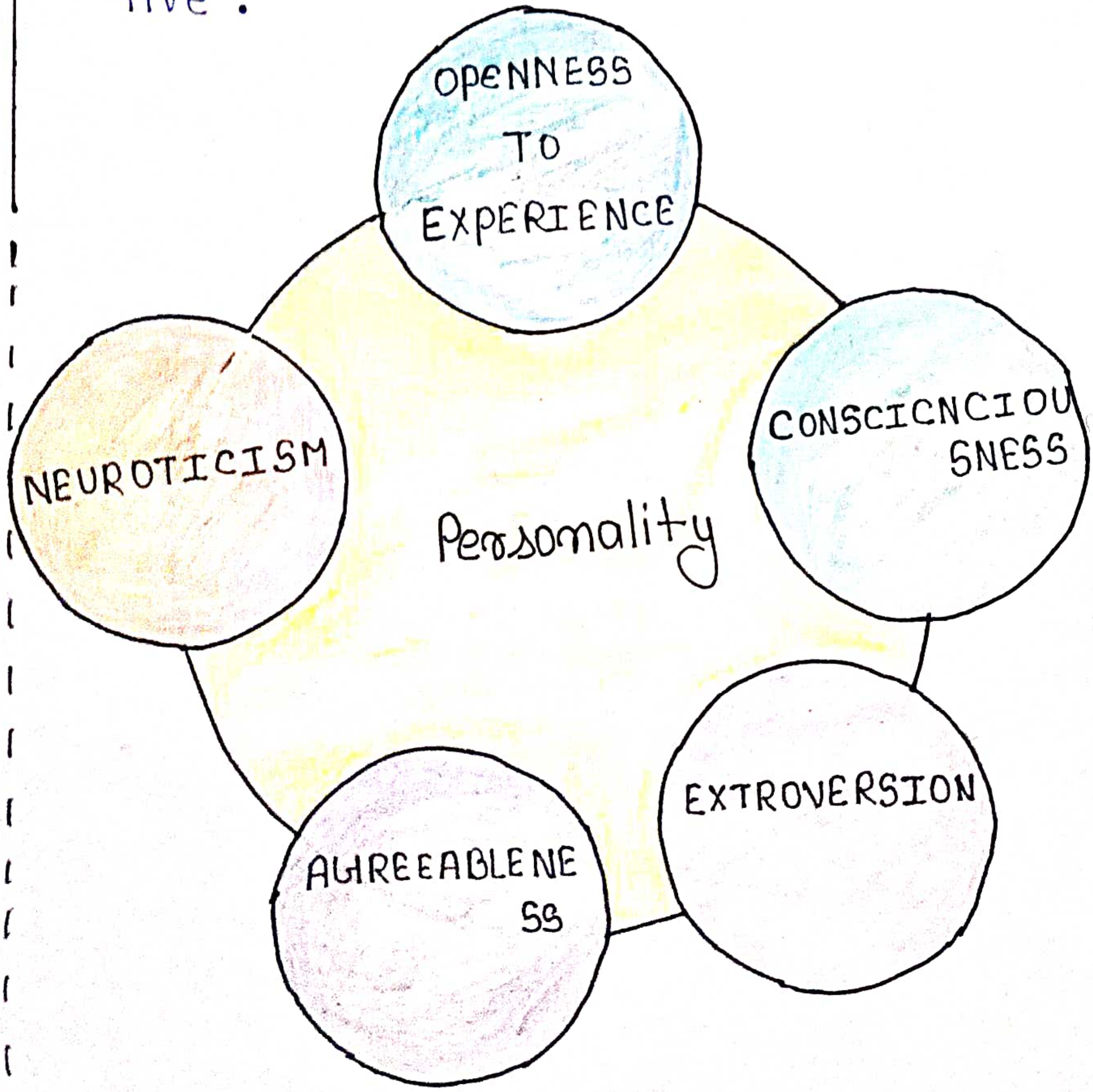

Types of personality

1. PERFECTIONIST
2. HELPFUL
3. ROMENTICS
4. ACHIEVERS
5. ASSERTED
QUESTIONERS
ADVENTURES
OBSERVERS AND
PEACEMAKERS

personality test

1. Value System
Emotional Reaction to a critical Syste-m.

2. Moods and characteristics behaviours traits Maturity in handling a Crisis.

INTEREST :-

Meaning -

Interest may be perfect to the motivation Force that impels us to attend to a person things or an activity or it may be the effective experience that has been stimulate by the activity is self.

Factors affecting interest

- Personal factors
- Physical et mental health
- Social development
- Age et sex Emotional, sentiments Et complex
- Wishes, ideas, motives and goals of life Attitude
- Environment factors Social, economic status
- Culture and Social environment
- Education and training opportunities

Generating interested :-

- Setting proper aims and objectives
- Problems selection organisations of learning materials
- Use of appropriate method and teaching aids Exploitation of various instincts of children
- Make proper use of sentiment and ideals
- Apranizing proper learning environment
- Teacher's personality

Aptitude :-

- Aptitude may be considered as a Special ability besides the general intellectual ability which helps an individual acquired degree of proficiency or achievement in a Specific fild as teaching aptitudes.
- Numerical aptitudes
- Musical aptitudes
  Typing aptitudes

Nature of aptitude

HEREDITY

ENVIRONMENT

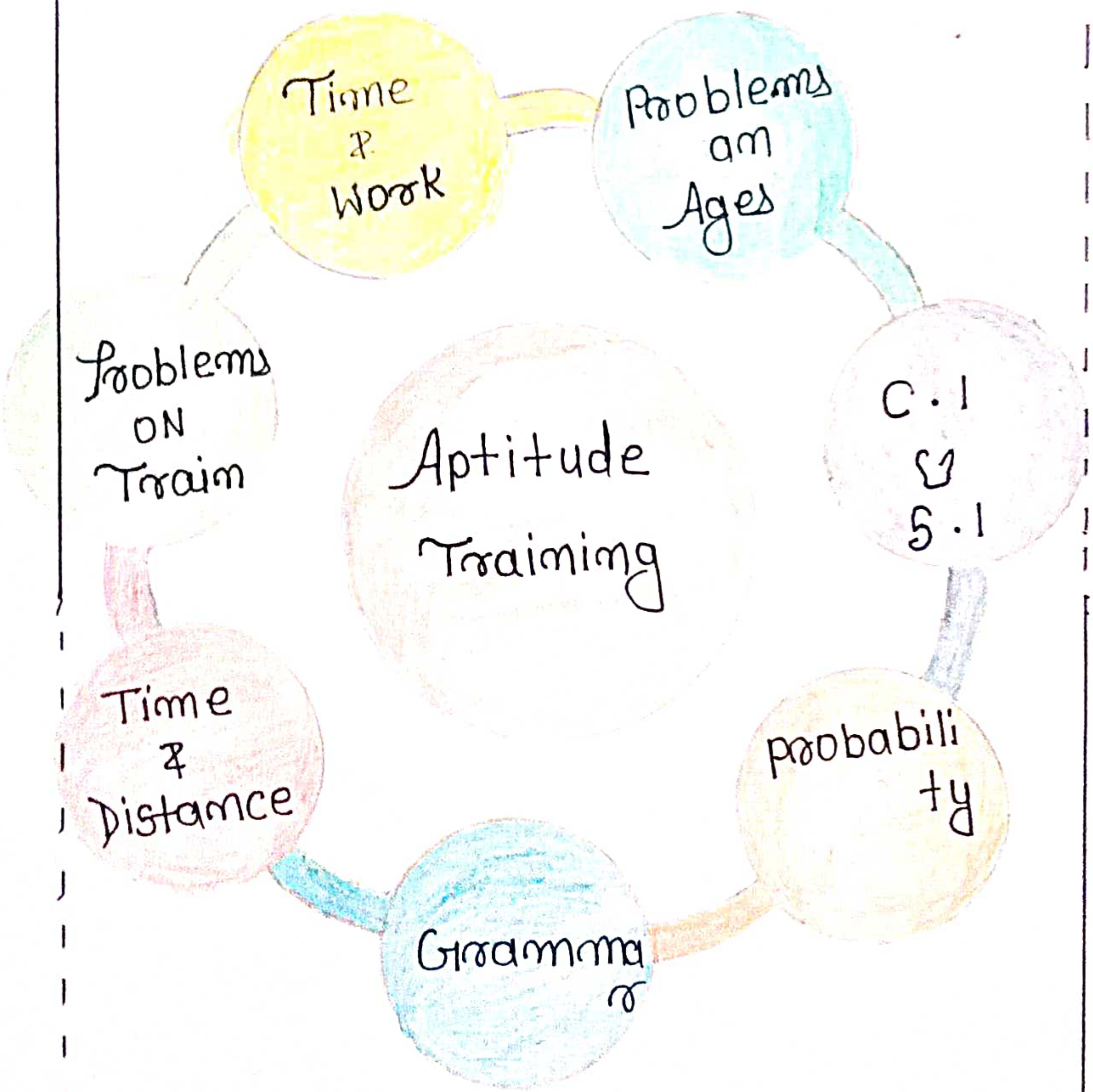
Time & Work
Problems on Ages
C.I & S.I
Probability
Grammar
Time & Distance
Problems ON Train
Aptitude Training

Classification of aptitude :-

- Sensory
- Mechanical
- Artistic
  (Musical, dance, graphics, acting etc)
- Professional (clerical, legal, teaching, pilot etc)
- Scholastic (scientific, engineer, Medical, commercial, linguistic etc)

Values :-

- Value is a judgement element of what is Right good or disable.

Types of Values :—

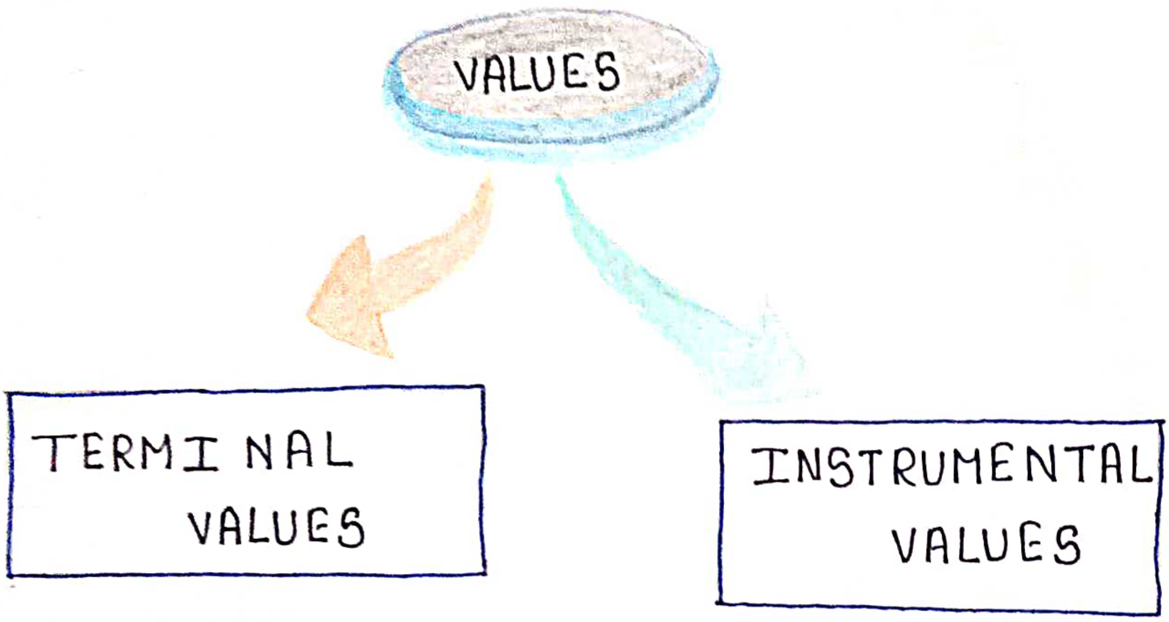

Importance of values

1. Values lay the foundation for the Understanding of attitudes and motivation because they influence our perceptions.

2. Individuals enter organizations with notions of what is right and wrong with which they

Interpret behaviors of outcomes.

3. Values generally influence attitudes and behavior.

Source of value

- FAMILY
- FRIENDS
- RELIGION
- SCHOOL
- BOOKS
- MEDIA AND INTERNET
- CULTURE
- EMPLOYERS

Values acrocss culture :-

Hofstede studied Cultural values across 50 countries A Framework for assessing Cultures; Five value dimensions of national culture

- (A) power distance
- (B) Individualism versus Collectivism
- (C) Quantity of life versus quality of Life
- (D) uncertainty avoidance
- (E) Long-term versus Short-term orientation

Creativity :-

Creativity is in my view something that is impossible to defiine in word.

Types of Creativity :-

- Artistic Creativity
- Scientific and technological creativity
- Hybrid creativity

The measurement of Creativity

1. The verbal measurement

2. The formal measurement

The motives of creativity

1. External motivations or for practi-cal goals internal motivational or for personal needs Motivatio-nal related to the creativity work itself barriers of creativity.

- Personal barriers
- Social barriers

Characteristics of Creatives persons :-

i) Originality
ii) persistence
iii) Independence
iv) Involvement and Detachment
v) Deferment and immediacy
vi) Incubations
vii) verification
viii) Discovers problem
ix) zenerated alternatives

Conclusion

Above we discussed a few important one's for the illustrations of the nature and kind of such differences found in the learners in our rooms.

CHILD'S DEVELOPMENTAL NEEDS

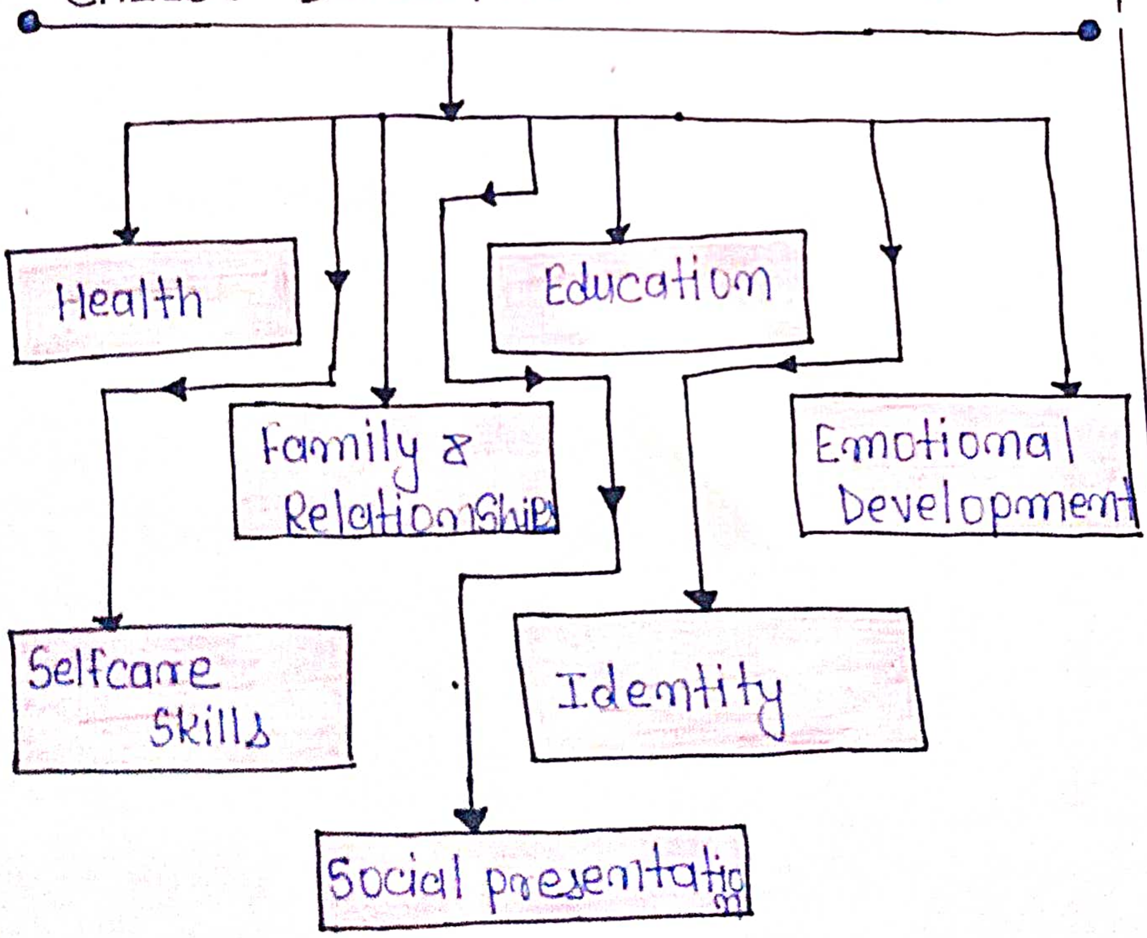

Maulana Mazharul Haque Teachers' Training College

مولانا مظہر الحق ٹیچرز ٹریننگ کالج

मौलाना मज़हरुल हक़ शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय

NAME :-> DEEPAK KUMAR
ROLL NO:- 230026
NAME:- MD. MIRSHAD ALAM
ROLL NO:- 230021
NAME:- AMIT KUMAR
ROLL NO:- 230048
NAME:- ROHIT KUMAR GUPTA
ROLL NO:- 230045
NAME:- ANSHU KUMAR
ROLL NO:- 230008
NAME- ASHOK KUMAR
ROLL NO- 230065

भाषा

भाषा यह बहुत ही रोचक विषय है। भाषा किसी भी व्यक्ति, समाज राष्ट्र अथवा देश की पहचान होती है। भाषा ही वह माध्यम है जो न केवल व्यक्ति के संवाद को सरल बनाती है बल्कि उसकी स्वयं की पहचान भी करती है।

यह व्यक्ति की क्षेत्रीय जातीयता को प्रदर्शित करता है। भाषा विकास संबंधी कुछ मुद्दो पर यह विभिन्न कारणो से विवादो के घेरे मे भी रहा है। वहीं देखा जाए तो इसके प्रचार - प्रसार भी बहुत अधिक हुए है। यह एक देश से दूसरे देश मे प्रचार भी किए है।

भाषा - पहचान

भाषा को वैसे तो संचार का एक माध्यम माना गया है किन्तु यह मनुष्य के पहचान निर्माण का भी एक सहायक माना गया है किसी भी व्यक्ति की पहचान उसकी भाषा और पारंपरिक रीति -रिवाजों से होती है। क्योंकि वह जो भाषा बोलता है वह एक राष्ट्र ही है जो किसी व्यक्ति से अधिक महत्वपूर्ण है। साथ ही किसी भूमि या प्रदेश की भाषा और पारंपरिक रीति रिवाज लंबे समय मे विकसित होकर मजबूती से स्थापित हो जाते है।

लोग जन्म लेते है मरते है लेकिन भाषा और परंपराएं शाश्वत होती है। वे नहीं मरती है वे सदा जीवित रहती है।

कुर्मी जहाँ भी जाता है वे उसे पहचान देती है।

भाषा किसी राष्ट्र के भीतर व्यक्तियो के लिए गौरव और पहचान के स्त्रोत के रूप मे कार्य करती है। राजकीय भाषा की महारत को अकसर राष्ट्रीय पहचान का एक अनिवार्य घटक माना जाता है जो व्यक्तियो को अपने देश के सास्कृतिक समाजिक और आर्थिक जीवन पूरी तरह से भाग लेने की अनुमति देती है।

पहचान निर्माण

जिसे पहचान विकास या पहचान निर्माण भी कहा जाता है। यह एक जटिल प्रक्रिया है जिसमे मनुष्य अपने और अपनी पहचान के बारे मे एक स्पष्ट और अद्वितीय दृष्टिकोण विकसित करते है।

आत्म - अवधारणा

व्यक्ति विकास और मूल्य सभी पहचान निर्माण से निकटता है से संबंधित है। व्यक्तिकरण भी पहचान निर्माण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। निरंतरता और आंतरिक एकता स्वस्थय पहचान निर्माण है जबकि किसी मे भी व्यवधान को असामान्य विकास के रूप मे देखा और लेबल किया जाता है।

कुछ स्थितियाँ, जैसे बचपन का आघात असामन्य विकास मे योगदान कर सकती है विशिष्ट कारक, भी पहचान निर्माण मे भूमिका निभाते है जैसे नस्ल, जातीयता और आध्यात्मिका।

व्यक्तिगत निरंतरता

व्यक्तिगत निरंतरता या व्यक्तिगत पहचान की अवधारणा एक व्यक्ति को अपने बारे ऐसे प्रश्न प्रस्तुत करने से सम्बन्धित करती है जो अपनी मूल धारणा को चुनौती देती है

जैसे :- "मै कौन हूँ"?

यह प्रक्रिया व्यक्तियो को दूसरो और स्वय के लिए परिभाषा करती है। विभिन्न कारक किसी व्यक्ति को वास्तविक पहचान बनाते है, जिसमे निरंतरता की भावना और परिवार जातीयता और व्यवस्था जैसे विभिन्न समूहो मे उनकी सदस्यता के आधार पर संबद्धता की भावना शामिल है।

भाषा द्वारा व्यक्तित्व पहचान

भाषा ध्वनि को अर्थ से जोड़ने वाली एक अमूर्त व्यवस्था है, जो मनुष्य के सोचने

और परस्पर विचार निमय का साधन है। इसके द्वारा हम ज्ञान का सचय करते है और उसे एक दूसरे से साझा करते है। व्यापक स्तर पर भाषा के सबंध मे विचार करने पर प्राप्त होता है कि यह केवल हमारे विचार विनियम का ही साधन नही है

भाषा के कारण ही मानव सभ्यता का इतना अधिकार विकास को पाया है इस दृष्टि से भाषा मनुष्य की सस्कृतिक विरासत और समाजिक पहचान भी है। व्यक्ति द्वारा वार्तालाप प्रयुक्त की जा रही है भाषा से हम उसके बारे मे अनेक बाते जान लेते है

भाषा प्रयोग द्वारा किसी व्यक्ति के बारे मे निम्नलिखित प्रकार की बाते मे जानी जाती है।

(i) भौगोलिक पृष्ठभूमि

किसी के द्वारा किये जाए जाने वाले भाषा व्यवहार मे उसकी भौगोलिक पृष्ठभूमि परिलक्षित होती है

उदाहरण के लिए ठंडे प्रदेश के लोग सामान्यता ध्वनि उच्चारण के लिए पूरा मुह नही खोलते है। इसी कारण ठंडे प्रदेश की भाषाओ मे मूर्धन्य ध्वनियाँ नही पाई जाती है

(ii) व्यावसायिक पृष्ठभूमि

किसी व्यक्ति से बाचचीत करते हुए

हम उसकी व्यवसायिक पृष्ठभूमि के बारे मे भी जान सकते है और दूसरे को बता सकते है। यदि आपको कोई व्यक्ति बिल्कुल पहली बार मिलती है और आप उसके साथ बातचीत करना आरंभ करे। इस दौरान बात करते हुए गौर करे कि व्यक्ति बात करते हुए अपनी व्यवस्था से जुड़े उदाहरण ही देता है।

जैसे :-

यदि व्यक्ति वकील है तो वह मुकदमे, व्यक्तियो के बीच झगड़े,

नियम :- कानून संबंधी उदाहरण देगा।

इसी प्रकार बैंक से जुड़ा व्यक्ति वित्तीय

वित्तीय - अदान - प्रदान के उदाहरणो से अपनी बात समझाना चाहेगा।

(iii) अभिव्यक्ति द्वारा स्वभाव की पहचान

लोगो के सोचने की एक मानसिक दिशा होती है। यह न भिन्न - भिन्न प्रकार के लोगो मे अलग - अलग होती है। यह दिशा उसकी संवेदनात्मक अनुभूति और उसी के अनुरूप अभिव्यक्ति को नियंत्रित करती है। इसे किसी विशेष घटना के घटित होने पर उसकी प्रतिक्रिया द्वारा पहचाना जा सकता है।

(iv) सामाजिक पृष्ठभूमि

भाषा को व्यक्ति की सामाजिक पहचान कहा जाता है। व्यक्ति जिस सामाजिक पृष्ठभूमि से होता है उस प्रकार की भाषा का प्रयोग उसके द्वारा किया जाता है। सामाजिक पृष्ठभूमि का संबंध व्यक्ति की आर्थिक स्थिति वर्गीय स्थिति आदि से है।

इस संबंध में समाज भाषावैज्ञानिक वर्नस्टीन द्वारा उच्च कोड और निम्न कोड की अवधारणा दी गई है। व्यक्ति जिस वर्ग से आता है उसकी बातचीत में उसी से जुड़ी शब्दवली का प्रयोग अधिक होता है।

भाषा एवं जाति

जाति शब्द संस्कृत की 'जनि' (जन) धातु में प्रत्यय लगकर बना है न्यायसूत्र के अनुसार "समान प्रसवात्मिका जाति" अर्थात जाति समान जन्म लेने वाले लोगो को मिला कर बनती है।

समान्य रूप से यदि हम देखे तो जाति का संबंध मनुष्य के जन्म लेने से है। मनुष्य की जीविका निर्वाह के लिए चुने गए कार्य क्षेत्र के आधार बनाकर किए गए को जाति कहते है।

भाषा अर्थात किसी भी जाति के अस्तित्व और उसके विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण बिन्दु है।

मनुष्य जिस जाति मे जन्म लेता है उस जाति का संस्कार उसके भीतर गहरे तक जुड़ा रहता है। यह सर्वविदित है कि हम जिस जाति मे जन्म लेते है, उसकी वेशभूषा, खान-पान, संस्कृति तथा भाषा का प्रभाव हमारे भीतर पड़ता है। ये सभी संस्कार हमे जन्म से मिलती है। यह देखा जा सकता है। कि एक जाति की भाषा मे दूसरी जाति की भाषा से अन्तर होता है।

रामविलास शर्मा ने जाति के विषय मे अपने विचार व्यक्त किये है। परन्तु वे जिस जाति शब्द की चर्चा करते है, उसका सम्बन्ध किसी caste विशेष से नही बल्कि प्रदेश विशेष मे रहने वाले लोगो से है।

आगे रामविलास जी ने लिखा है:-

" भारत मे अनेक भाषाए बोली जाति है इन भाषाओं के अपने - अपने प्रदेश है। इन प्रदेशो मे रहने वाले लोगो को 'जाति' की संज्ञा दी जाती है। वर्ण व्यवस्था वाली जाति - पाति से इस 'जाति' का अर्थ बिल्कुल भिन्न है किसी भाषा को बोलने वाली उस भाषा क्षेत्र मे बसने वाली इकाई का नाम जाति है।"

रामविलास भाषा के महत्व को भली - भाती जानते और समझते थे। वे राष्ट्र को एक सूत्र मे बाधने के पक्षधर थे। वे जानते थे कि कोई भी राष्ट्र तभी तक जीवित रह सकता है। जब तक उस राष्ट्र की एकता बनी रहे।

जिसका बहुत आधिक दायित्व भाषा पर भी है वे कहते है जिस तरह भाषा के आधार पर बांगला गुजराती, मराठी आदि जातियों की पहचान होती है। उसी तर्ज पर हिन्दी प्रदेश के लोग भी जनपदीय बोलियों के आधार पर पहचाने जाने के बजाय एक हिन्दी भाषी जाति के रूप मे पहचाने जाए।

विभिन्न जातियाँ जब किसी कारणवश अपने क्षेत्र से बाहर निकलती है और अन्य क्षेत्र के किसी व्यक्ति / जाति से वार्तालाप करती है तो यह स्वाभाविक ही है कि उन दोनो पर ही एक - दूसरे की भाषा का प्रभाव पड़ता है। परन्तु फिर भी जब क्षेत्रीयता की आती है तब उनका जोर अपनी भाषा की विशिष्टा को बनाए रखने का होता है इस प्रकार एक देश मे रहते हुए एक जाति -भाषा के अधार पर अन्य जाति से भिन्न हो जाती है

एक ही जातीय भाषा के लोग आपस मे एक - दूसरे की भाषा को समझ सकते है। परन्तु यह आवश्यक नही कि अन्य जाति के लोगो की भाषा भी वे समझ सके।

जैसे :-

एक राजस्थानी भाषी का भाषा एक ब्रज भाषी समझ सकता है परन्तु एक तामिल भाषी मराठी भाषी की भाषा को आसानी से नही समझ सकता है।

हमारे देश मे बहुत सी भाषाएँ बोली व समझी जाती है, इनमें से कुछ भाषाएँ ऐसी है जो हिन्दी भाषा से निकली है। पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी पहाड़ी आदि। सभी हिन्दी भाषा के अन्तर्गत आते है। इन भाषा भाषी क्षेत्रों के अलावा बंगाली, मराठी, तमिल, कन्नड़, पंजाबी भाषा भाषी भी है जिनकी भाषाओ करने का तरीका हिन्दी भाषा - भाषी से भिन्न हो सकते है।

क्योंकि प्रत्येक भाषा - भाषी के सम्प्रेषण करने के प्रतीक चिन्ह भिन्न भिन्न होता है। वे सभी अपनी जाति अर्थात क्षेत्रीय के आधार पर ही सम्प्रेषण करते है। उनकी भाषा का शब्दकोश उनकी क्षेत्रीयता पर ही निर्धारित होता है।

अतः स्पष्ट है कि भाषा और जाति का संबंध एक दूसरे से निकलते है। परिचय एक दूसरे से कहीं न कहीं भिन्न भी है किसी भी मनुष्य की भाषा उसका जातीय प्रभावित का आधार होता है।

भाषा के इन जातियो संस्कारो के सहायक से ही भाषा वैज्ञानिक भाषा का अध्ययन और वर्गीकरण कर पाते है। भाषा के जातीय संस्कारो के माध्यम से ही हम सजातीय और विजातीय भाषाओ का अध्ययन कर पाते है।

भाषाई संघर्ष / विवाद

भाषा की जातीय चेतना है कि अब हिन्दी की क्षेत्रीय बोलियों को भी भाषा का दर्जा देने की माँग उठ रही है। भाषा और जाति जहाँ एक ओर हमें जोड़ने का काम करती है, वहीं दूसरी ओर जातीय भाषा कभी कभी उत्पीड़न का भी काम करती है।

अंग्रेजों ने हिन्दू - मुसलमानों के बीच बैर को आगे बढ़ाने में हिन्दू हिन्दी एवं उर्दू भाषा को भी एक मुद्दा बनाया था। उन्होंने दोनों जातियों के बीच गहरा अलगाव पैदा किया।

वर्तमान समय में देखा जाए तो यह प्रतीत होता है कि दक्षिण एवं उत्तर भारत के मध्य विवाद का एक प्रमुख कारण भाषा है। इन्हीं कारणों की वजह से आजतक भारत देश का कोई भी मान्यता प्राप्त राष्ट्रभाषा नहीं बनाया जा सका है।

वैसे तो भारतीय संविधान की 8वीं अनुसूची में कुल 22 भाषाओं का वर्णन देखने को मिला है। परन्तु जब कभी भी हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने की माँग की जाती है। तो दक्षिण भारतीय समुदायों द्वारा इसका विरोध किया जाता है। जो कई मुद्दों पर विवाद का रूप ले लेता है।

भारतीय परिपेक्ष्य मे भाषाई विवाद के कुछ प्रमुख कारण निम्न बिन्दुओ द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

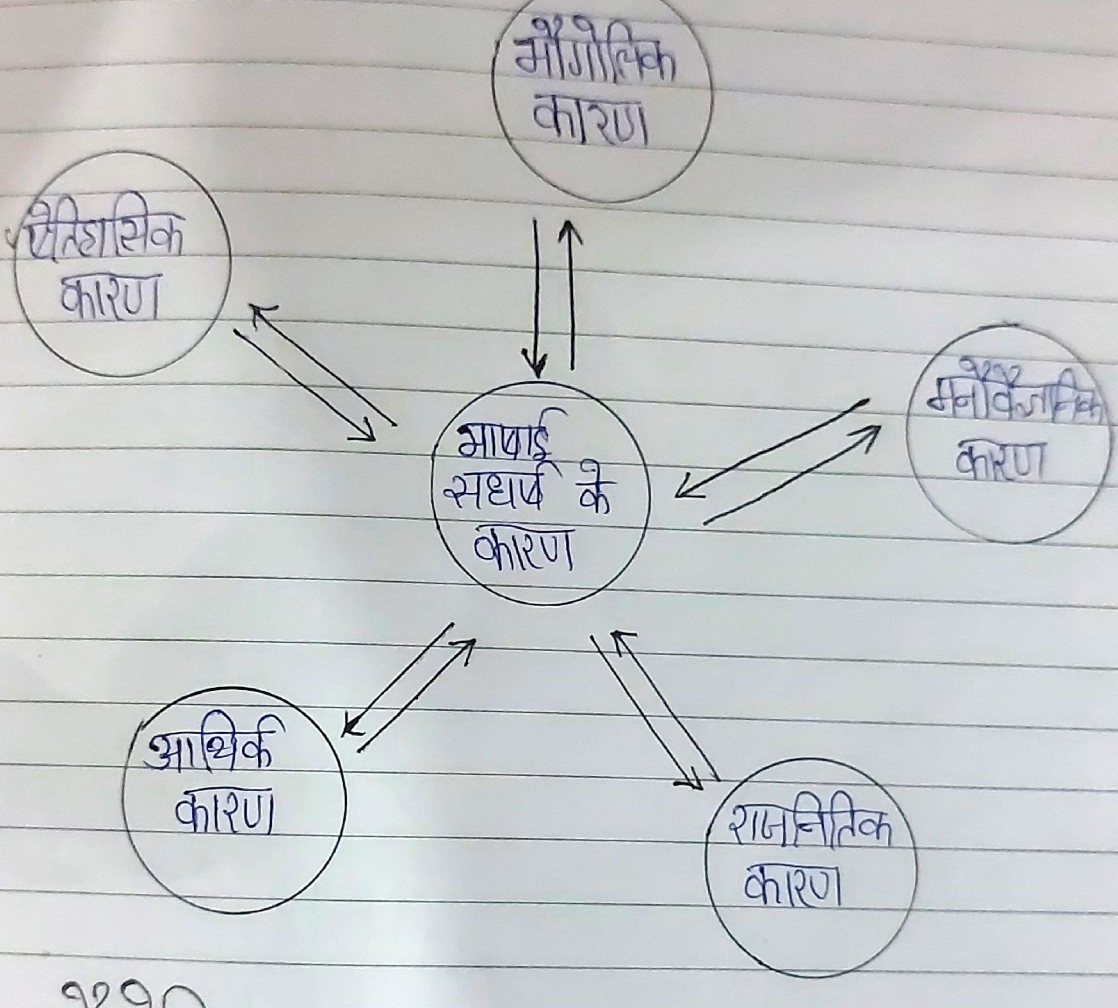

i) भौगोलिक कारण : भौगोलिक अलगाव और विविधता लोगो के बीच स्थानीय पहचान और विशिष्टता को बढ़ावा देता है। क्षेत्रीय मतभेदों के साथ-साथ भाषाई विविधताएं और विभिन्न दृष्टिकोण का विकास भी राष्ट्रीय एकता मे बाधक है।

(ii) ऐतिहासिक कारण :-

भारत में भाषावाद के भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान गति मिली। भाषाई सीमाओं को तोड़कर देश को विभाजन की ब्रिटिश प्रणाली की आलोचना करते हुए हमारे राष्ट्रीय नेताओं ने भाषाई आधार पर भारत को विभिन्न प्रांतो मे विभाजित करने की वकालत की थी।

आजादी के बाद 1956 मे भाषाओ की एकरूपता के आधार पर राज्यों का पुनर्गठन किया गया। "भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन ने जितनी समस्याएँ हल की है उससे कहीं अधिक समस्याएं पैदा कर दी है। राष्ट्र के साथ पहचान को भाषाई राज्य के साथ पहचाना की बलि चढ़ा दिया गया है।

(iii) मनोवैज्ञानिक कारण

भाषा सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक उपकरण है जिसे किसी समाज ने विकसित किया है। समाजीकरण को सबसे बड़ी शक्ति होने के अलावा, इनमे कुछ मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक विशेषताएँ है जो एक सजातीय समूह मे जातीयता की भावना पैदा करती है।

संचार के एक माध्यम के रूप मे यह संसार और बातचीत के सभी विचारो को सम्भालने मे सक्षम है। भारत मे भाषाई समूह समान्य हितो के बंधन से एक बंधे हुए है।

इससे निवासियो के मन मे क्षेत्रवाद, सम्प्रदायवाद और परिणामस्वरूप राष्ट्रीय एकता की अवधारणा के विपरीत अलगाववादी भावना पैदा होती है।

(iv) आर्थिक कारण :

भाषावाद का विकास आर्थिक कारणो से भी हो सकता है। सरकार कुछ भाषाओ को बढ़ावा देती है और मौद्रिक प्रलोभनो के माध्यम से भाषाओ समूहो के लिए चिंता का विषय है, जिन्हे लगता है कि पक्षपात किया गया है और वो इसका कड़ा विरोध करते है।

(v) राजनीतिक कारण :

संकीर्ण दृष्टिकोण वाले राजनेता और कुछ क्षेत्रीय राजनीतिक दल एक इलाके के लोगो के बीच भाषाई भावना पैदा करते है। और चुनाव के समय और विभिन्न राजनीतिक मुद्दो पर उनकी भावनाओ का फायदा उठाते है।

भाषा - प्रवास

प्रवास शब्द अंग्रेजी के शब्द का हिन्दी पर्याय है यह शब्द लैटिन क्रिया माइग्रेट से निकला है जिसका अर्थ " एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना।"

भाषा के सन्दर्भ मे देखा जाए तो इसके दो पहलू नजर आते है।
(i) साकारात्मक पहलू
(ii) नाकारात्मक पहलू

* साकारात्मक पहलू

साकारात्मक की दृष्टि से देखा जाए तो भाषा प्रवास बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। भाषा - प्रवास मे यदी देखा जाए तो सबसे अधिक प्रवास किसी भाषा का हुआ है तो वह है अंग्रेजी भाषा।

पहले ऐसा कहा जाता था कि अंग्रेजी की भाषा है किन्तु वर्तमान समय मे देखा जाए तो अंग्रेजी के बिना जीवन मे बहुत सारी बाधाएं उत्पन्न होती नजर आ रही है। यहा तक की कई सारे विद्यालय महाविद्यालय मे भी अंग्रेजी को एक अनिवार्य विषय बना दिया गया है।

भाषा प्रवास को ध्यान मे रखते समय हुए बहुत सारे विकसित और विकासशील देशो ने दूसरे देश के अंदर अपनी भाषा अध्ययन प्रचार - प्रसार के लिए भाषा विद्यालय खोल रहा है। जिससे वहां के इच्छुक लोग दूसरे देश की भाषा को सीख सके।

भारत मे भी कई केन्द्रीय स्तर के विश्वविद्यालय मे भी विदेशी भाषा की पढाई कराई जाती है। यहाँ न केवल भारत के बल्कि विदेशो के बच्चो भी आकार विभिन्न भाषा मे ज्ञानार्जन कर रहे है।

* नाकारात्मक पहलू

नाकारात्मक दृष्टिकोण से देखा जाए तो भाषा प्रवास अभिशाप है क्योंकि इसके आने से एक विशेष समुदाय / क्षेत्र / देश की अपनी मातृभाषा पर संकट उत्पन्न हो जाती है।

इच्छुक व्यक्ति नए - नए भाषाओं को सीख लेते हैं। परन्तु अपनी भाषा संस्कृति आदि को भूलने लगते हैं।

उदाहरण के लिए उत्तर भारत में मैथली, भोजपुरी, मगही, आगिका, सांथली अवधी, ब्रजभाषा, आदि पिछड़ रही है। वही दक्षिण की कई नाममात्र की भाषाओं को तमिल, तेलगु, कन्नड़ और मलयालम से गंभीर खतरा है।

भारत मे अंग्रेजी प्रचार - प्रसार का प्रथम प्रयात मैकाले की शिक्षा नीति के द्वारा किया गया है। जहाँ अंग्रेजी शिक्षा के लिए खर्च करने का निर्णय लिया गया था।

अतः हम कह सकते हैं कि भारत दुनिया के उन अनूठे देशों मे से है। जहाँ भाषाएँ मे विविधता की विरासत है। हमारी भाषाई विविधता न तो कोई समस्या है और न ही पिछड़ेपन की निशानी।

इस मुद्दे को थोड़ी गहराई से समझने का प्रयास करे। यह सवाल उठाना लाजिमी है कि क्या भारत महज इसीलिए बहुभाषी देश है कि भारतीय संविधान ने हिन्दी अंग्रेजी समेत आठवीं अनुसूची मे उल्लेखित भाषाओं को वैधानिक दर्जा दिया है?

दरअसल ' बहुभाषीक परिदृश्य से जुड़े अनेक दृश्य है। उदाहरण के लिए जिस भाषा की अपनी कोई लिपि न हो या जिसकी कोई बहुत लंबी-चौड़ी विरासत न हो तब भी उस भाषा का भारत के बहुभाषिक बड़ा योगदान आंका जा सकता है।

भारतीय विविधता की परिदृश्य से देखा जाए तो यह भी कहा जा सकता है कि भारत मे कोई भाषा सहर्ष नहीं है। कुछ भी भारतीय चाहते है कि हिन्दी भारत की एकमात्र राष्ट्रीय भाषा हो। जो कि स्पष्ट रूप से हास्यास्पद है, क्योंकि कई भारतीय हिन्दी नही जानते है और लिए हिन्दी सीखने का कोई फायदा नही है। उपयोग नही है। क्योंकि भारत मे अधिकांश शिक्षा अंग्रेजी मे होती है।

विश्व के तेजी से प्रगति कर रहे सभी विकासशील देश ऐसा अंग्रेजी अपनाये बिना, अपनी निज भाषाओ के माध्यम से कर रहे है भारत मे येह स्थिति उल्टी है।

यहाँ अंग्रेजी की पकड़ बढ रही है और भारतीय भाषाये लुप्त हो रही है। इसका प्रमुख कारण है हमारी भाषाये है। यदि सभी भारतीय भाषाये एक लिपि अपनाये जो वर्तमान मे विभिन्न लिपियो का मिला जुला रूप है परन्तु सबसे महत्वपूर्ण कदम होगा दक्षिण की चार भाषाओ को उत्तर भारत मे मान्यता साथ ही हिन्दी के पाठ्यक्रम मे दूसरी उत्तर भारतीय भाषाओ की श्रेष्ठ रचनाये जोड़ी जाये ताकि छात्र इन भाषाओ की निकटता से परिचित हो वो भाषाये भी ऐसे ही निति को अपनाये।

भारत को अपने व्यापक पिछड़ेपन से यदि कभी उबरना है विभिन्न वर्गों की घोर आसामनता यदि कम करनी है तो जरूरी होगा कि हम एक आम आदमी को उसी की भाषा मे शिक्षा और शासन दे :-

जैसे : कि हर देश मे होता है।

Maulana Mazharul Haque Teachers' Training College

مولانا مظہر الحق ٹیچرز ٹریننگ کالج

मौलाना मज़हरुल हक़ शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय

Maulana Mazharul Haque Teachers' Training College

Mathurapur, Samastipur, Bihar